रघुवर! तुमको मेरी लाज

सन्त-कवि तुलसीदास द्वारा रचित भजन

ध्रुवपद

हे रघुवर! मेरी लाज अब आपके हाथों में है।

पद १

मैं तो सदैव आपकी शरण में हूँ,
क्योंकि आप दीनों, असहायों के रक्षक हैं।

पद २

आप पतितों का उद्धार करने के लिए जाने जाते हैं;
यह मैंने अपने कानों से सुना है।

पद ३

यद्यपि मैं पतित हूँ, बहुत काल से पापकर्म करता आया हूँ,
पर कृपा कर आप इस भवसागर से मेरा बेड़ा पार कीजिए।

पद ४

आप लोगों के पापों और दुःखों का नाश करने वाले हैं।
यही आपका कार्य है।

पद ५

तुलसीदास कहते हैं, “हे भगवान, मुझ पर कृपा कीजिए।
आज मुझे अपनी भक्ति का दान दीजिए।”

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस भजन की रिकॉर्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर में
Sounds of the Heart [हृदय के बोल] नामक सी. डी. के रूप में उपलब्ध है।